bdkbZ 35 uk[kwu D;ksa c<+rs gSa\ ¼gtkjh izlkn f}osnh½ okpu

bdkbZ dh :ijs[kk

35.0 उद्देश्य
35.1 प्रस्तावना
35.2 निबंध का वाचन : नाखून क्यों बढ़ते हैं?
35.3 निबंध का सार
35.4 संदर्भ सहित व्याख्या
35.5 सारांश
35.6 शब्दावली
35.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

35-0 mís';

इस इकाई में आप आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' का अध्ययन करेंगे। आरंभ में आप निबंध का वाचन करेंगे और इसके बाद निबंध का सार और उसके महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या पढ़ेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- निबंध की विषयवस्तु का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे;
- निबंध में आये कठिन शब्दों के अर्थ बता सकेंगे; और
- निबंध के महत्त्वपूर्ण अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे।

35-1 izLrkouk

अब तक आप इस खंड में दो इकाइयों का अध्ययन कर चुके हैं। इकाई 33 में आपने हिंदी की कथेतर गद्य विधाओं के बारे में अध्ययन किया था और इकाई 34 में आपने भारतेंदु हरिश्चंद्र के निबंध 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' का अध्ययन किया था। हिंदी निबंध की परंपरा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेद्वी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। द्विवेदी जी ने हिंदी निबंध की परंपरा को समृद्ध ही नहीं किया अपितु उसे नयी दिशा भी दी है। उनके इसी महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए हमने हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' को दो-दो इकाइयों में विवेचित किया है। 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' का अध्ययन आप दो इकाइयों में करेंगे। इस इकाई में निबंध का वाचन और उसका सार तथा उसके महत्त्वपूर्ण अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या का अध्ययन करेंगे। इससे अगली इकाई में आप अंतर्वस्तु, लेखकीय व्यक्तित्व के प्रभाव, भाषा और शैली तथा प्रतिपाद्य आदि की दृष्टि से निबंध का विवेचनात्मक अध्ययन करेंगे।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में हुआ था और उच्च शिक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राप्त की। आपने शांति निकेतन में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सान्निध्य में हिंदी का अध्यापन कार्य किया था। बाद में आपने कुछ समय तक बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और पंजाब विश्वविद्यालय में भी अध्यापन कार्य किया। आपने संस्कृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं के साहित्य का गहन अध्ययन किया था और बंगला आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य से भी भली-भांति परिचित थे। आपकी दृष्टि आधुनिक थी इसलिए पांडित्य के साथ-साथ आधुनिक चिंतन दृष्टि आपके लेखन की खास विशेषता है। आपने अपना लेखन मुख्य रूप से साहित्य के इतिहास और आलोचना के क्षेत्र से आरंभ किया। विशेष रूप से प्राचीन और मध्ययुगीन हिंदी साहित्य का आपका अध्ययन अत्यंत गंभीर और मौलिक है। बाद में आप उपन्यास और निबंध लेखन की ओर भी प्रवृत्त हुए। आपके सभी उपन्यास ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखे गए हैं। आपकी रुचि अतीत के सांस्कृतिक चित्रण की ओर अधिक रही है। व्यापक ekuorkoknh nf"V आपके लेखन में प्रतिबिंबित हुई है। आपने ललित निबंध नामक एक नई निबंध शैली का विकास किया जो आचार्य शुक्ल की शैली से अलग लेकिन उतनी ही महत्त्वपूर्ण कही जा सकती है। आपका निधन 1979 में हुआ।

द्विवेदीजी द्वारा रचित प्रमुख पुस्तकें हैं :

bfrgkl vkj vkykpuk l l cf/kr % 'हिंदी साहित्य का आदिकाल', 'हिंदी साहित्य की भूमिका', 'हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास', 'कबीर', 'सूर साहित्य', 'नाथ साहित्य', 'मध्ययुगीन धर्म साधना', 'प्राचीन भारत में कलात्मक विनोद' तथा 'कालीदास की लालित्य योजना'।

miU;kl % 'बाण भट्ट की आत्मकथा', 'चारू चंद्रलेख', 'पुनर्नवा' और 'अनामदास का पोथा'।

fuc/k lxg% 'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क', 'कल्पलता', 'कुटज', 'आलोक पर्व', आदि। ''नाखून क्यों बढ़ते हैं?'' निबंध 'कल्पलता' पुस्तक में संकलित हैं।

35-2 fuc/k dk okpu % uk[ku D;k c<r g\

बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाल देने वाले प्रश्न कर बैठते हैं। vYiK पिता बड़ा दयनीय जीव होता है। मेरी छोटी लड़की ने जब उस दिन पूछ दिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं, तो मैं कुछ सोच ही नहीं सका। हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं, बच्चे कुछ दिन अगर उन्हें बढ़ने दें, तो मां-बाप अक्सर उन्हें डांटा करते हैं। पर कोई नहीं जानता कि ये अभागे नाखून क्यों इस प्रकार बढ़ा करते हैं। काट दीजिए, वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे; पर निर्लज्ज अपराधी की भांति फिर छूटते ही l/k पर हाजिर। आखिर ये इतने बेहया क्यों हैं?

कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था; cueku"k जैसा। उसे नाखून की जरूरत थी। उसकी जीवन-रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे। असल में वही उसके अस्त्र थे। दांत भी थे, पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था। उन दिनों उसे जूझना पड़ता था, प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ना पड़ता था, नाखून उसके लिए आवश्यक अंग था। फिर धीरे-धीरे वह अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा। पत्थर के ढेले और पेड़ की डालें काम में लाने लगा (रामचंद्रजी की वानरी सेना के पास ऐसे ही अस्त्र थे)। उसने हड्डियों के भी हथियार बनाये। इन हड्डी के हथियारों में सबसे मजबूत और सबसे ऐतिहासिक था देवताओं के राजा का वज्र, जो n/khfp मुनि की हड्डियों से बना था। मनुष्य और आगे बढ़ा। उसने धातु के हथियार बनाये। जिनके पास लोहे के शस्त्र और अस्त्र थे, वे विजयी हुए। देवताओं के राजा तक को मनुष्यों के राजा से इसलिए सहायता लेनी पड़ती थी कि मनुष्यों के राजा के पास लोहे के अस्त्र थे। vljk के पास अनेक विद्याएं थीं, पर लोहे के अस्त्र नहीं थे, शायद घोड़े भी नहीं थे। vk;k के पास ये दोनों चीजें थीं। आर्य विजयी हुए। फिर इतिहास अपनी गति से बढ़ता गया। ukx हारे, lo.k हारे, x/ko हारे, असुर हारे, राक्षस हारे। लोहे के अस्त्रों ने बाजी मार ली। इतिहास आगे बढ़ा। iyhr okyh cndk ने, कारतूसों ने, तोपों ने, बमों ने, बमवर्षक वायुयानों ने इतिहास को जिस कीचड़ भरे घाट पर घसीटा है, यह सबको मालूम है। नख-धर मनुष्य अब एटम-बम पर भरोसा करके आगे की ओर चल पड़ा है। पर उसके नाखून अब भी बढ़ रहे हैं। अब भी प्रकृति मनुष्य को उसके भीतर वाले अस्त्र से वंचित नहीं कर रही हैं, अब भी वह याद दिला देती है कि तुम्हारे नाखून को भुलाया नहीं जा सकता। तुम वही लाख वर्ष पहले के u[k-nrkoych जीव हो – पशु के साथ एक ही सतह पर विचरने वाले और चरने वाले।

rr% fdeA मैं हैरान होकर सोचता हूं कि मनुष्य आज अपने बच्चों को नाखून काटने के लिए डांटता है। किसी दिन- कुछ थोड़े लाख वर्ष पूर्व - वह अपने बच्चों को नाखून नष्ट करने पर डांटता रहा होगा। लेकिन प्रकृति है कि वह अब भी नाखून को ज़िलाये जा रही है और मनुष्य है कि वह अब भी उसे काटे जा रहा है। वे कंबख्त रोज बढ़ते हैं, क्योंकि वे अंधे हैं, नहीं जानते कि मनुष्य को इससे कोटि-कोटि गुना शक्तिशाली अस्त्र मिल चुका है। मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। उसके भीतर बर्बर-युग का कोई vo'k"k रह जाय, यह उसे असह्य है। लेकिन यह भी कैसे कहूँ, नाखून काटने से क्या होता है? मनुष्य की ccjrk घटी कहां है, वह तो बढ़ती जा रही है। मनुष्य के इतिहास में fgjkf'kek का हत्याकांड बार-बार थोड़े ही हुआ है। यह तो उसका नवीनतम रूप है। मैं मनुष्य के नाखून की ओर देखता हूँ कि कभी-कभी निराश हो जाता हूँ। ये उसकी भयंकर ik'koh ofÙk के जीवंत प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती।

कुछ हजार साल पहले मनुष्य ने नाखून को सुकुमार विनोदों के लिए उपयोग में लाना शुरू किया। okRL;k;u dk dkel= से पता चलता है कि आज से दो हजार वर्ष पहले का भारतवासी नाखूनों को जम के संवारता था। उनके काटने की कला काफी मनोरंजक बतायी गयी है। त्रिकोण, ortykdkj] pnkdkj] nrty आदि विविध आकृतियों के नाखून उन दिनों

विलासी नागरिकों के न जाने किस काम आया करते थे। उनको सिक्थक (मोम) और अलक्तक (आलता) से यत्नपूर्वक रगड़कर लाल और चिकना बनाया जाता था। xkM+ n'k के लोग उन दिनों बड़े-बड़े नखों को पसंद करते थे और nf{k.kkR; लोग छोटे नखों को। अपनी-अपनी रुचि है, देश की भी और काल की भी। लेकिन समस्त v/kkxkfeuh वृत्तियों को और नीचे खींचने वाली वस्तुओं को भारतवर्ष ने मनुष्योचित बनाया है, यह बात चाहूँ भी तो भूल नहीं सकता।

मानव-शरीर का अध्ययन करने वाले प्राणी विज्ञानियों का निश्चित मत है कि मानव-चित्त की भांति मानव-शरीर में भी बहुत-सी अभ्यास जन्य lgt ofÙk;k रह गयी हैं। दीर्घकाल तक उनकी आवश्यकता रही है। अतएव शरीर ने अपने भीतर एक ऐसा गुण पैदा कर लिया है कि वे वृत्तियां अनायास ही, और शरीर के अनजान में भी, अपने आप काम करती हैं। नाखून का बढ़ना उसमें से एक है, केश का बढ़ना दूसरा है, दांत का दुबारा उठना तीसरा है, पलकों का गिरना चौथा है। और असल में सहजात वृत्तियां अनजान की स्मृतियों को ही कहते हैं। हमारी भाषा में भी इसके उदाहरण मिलते हैं। अगर आदमी अपने शरीर की, मन की ओर वाक् की अनायास घटने वाली वृत्तियों के विषय में विचार करे, तो उसे अपनी वास्तविक प्रवृत्ति पहचानने में बहुत सहायता मिले। पर कौन सोचता है? सोचना तो क्या उसे इतना भी पता नहीं चलता कि उसके भीतर नख बढ़ा लेने की जो सहजात वृत्ति है, वह उसके पशुत्व का प्रमाण है। उन्हें काटने की जो प्रवृत्ति है, वह उसकी मनुष्यता की निशानी है और यद्यपि पशुत्व के चिह्न उसके भीतर रह गये हैं, पर वह पशुत्व को छोड़ चुका है। पशु बनकर वह आगे नहीं बढ़ सकता। उसे कोई और रास्ता खोजना चाहिए। अस्त्र बढाने की प्रवृत्ति मनुष्यता की विरोधिनी है। मेरा मन पूछता है - किस ओर? मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है? पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र काटने की ओर। मेरी fuckf/k बालिका ने मानो मनुष्य-जाति से ही प्रश्न किया है - जानते हो, नाखून क्यों बढ़ते है? यह हमारी पशुता के अवशेष हैं। मैं भी पूछता हूँ - जानते हो, ये अस्त्र-शस्त्र क्यों बढ़ रहे हैं? — ये हमारी पशुता की निशानी है। भारतीय भाषाओं में प्रायः ही अंग्रेजी के ''इंडिपेंडेंस' शब्द का समानार्थक शब्द नहीं व्यवहृत होता। 15 अगस्त को जब अंगरेजी भाषा के पत्र 'इंडिपेंडेंस' की घोषणा कर रहे थे, देशी भाषा के पत्र 'स्वाधीनता दिवस' की चर्चा कर रहे थे। 'इंडिपेंडेंस' का अर्थ है, अनधीनता या किसी भी अधीनता का अभाव, पर 'स्वाधीनता' शब्द का अर्थ है, अपने ही अधीन रहना। अंग्रेजी में कहना हो, तो 'सेल्फडिपेंडेंस' कह सकते हैं। मैं कभी-कभी सोचता हूं कि इतने दिनों तक अंग्रेजी की vuofrrk करने के बाद भी भारतवर्ष 'इंडिपेंडेंस' को अनधीनता क्यों नहीं कह सका? उसने अपनी आजादी के जितने भी नामकरण किये — स्वतंत्रता, स्वराज, स्वाधीनता — उन सबमें 'स्व' का बंधन अवश्य रखा। यह क्या संयोग की बात है या हमारी समूची परंपरा ही अनजान में हमारी भाषा के द्वारा प्रकट होती रही है। मुझे प्राणि-विज्ञानी की बात फिर याद आती है-सहजात वृत्ति अनजानी स्मृतियों का ही नाम है। स्वराज होने के बाद स्वभावतः ही हमारे नेता और विचारशील नागरिक सोचने लगे हैं कि इस देश को सच्चे अर्थ में सुखी कैसे बनाया जाय। हमारे देश के लोग पहली बार यह सब सोचने लगे हों, ऐसी बात नहीं है। हमारा इतिहास बहुत पुराना है, हमारे शास्त्रों में इस समस्या को नाना भावों और नाना पहलुओं से विचारा गया है। हम कोई नौसिखुए नहीं हैं, जो रातों-रात अनजान जंगल में पहुंचकर आरक्षित छोड़ दिये हों। हमारी परंपरा महिमामयी, उत्तराधिकार foiqy और संस्कार उज्ज्वल हैं। हमारे अनजान में भी ये बातें हमें एक खास दिशा में सोचने की प्रेरणा देती हैं। यह जरूर है कि परिस्थितियां बदल गयी हैं। उपकरण नये हो गये हैं और उलझनों की मात्रा भी बहुत बढ़ गयी है, पर मूल समस्याएं बहुत अधिक नहीं बदली हैं। भारतीय चित्त जो आज भी 'अनधीनता' के रूप में न सोचकर 'स्वाधीनता' के रूप में सोचता है, वह हमारे दीर्घकालीन संस्कारों का फल है। वह 'स्व' के बंधन को आसानी से नहीं छोड़ सकता। अपने-आप पर अपने-आप के द्वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बड़ी भारी विशेषता है। मैं ऐसा तो नहीं मानता कि जो कुछ हमारा पुराना है, जो कुछ हमारा विशेष है, उससे हम चिपटे ही रहें। पुराने का 'मोह' सब समय वांछनीय ही नहीं होता। मरे बच्चे को गोद में दबाये रहने वाली 'बंदरिया' मनुष्य का आदर्श नहीं बन सकती। परंतु मैं ऐसा भी नहीं सोच सकता कि हम नयी vuqlf/kRlk के नशे में चूर होकर अपना सरबस खो दें। dkfynkl ने कहा था कि सब पुराने अच्छे नहीं होते, सब नये खराब ही नहीं होते। भले लोग दोनों की जांच कर लेते हैं, जो हितकर होता है उसे ग्रहण करते हैं, और मूढ़ लोग दूसरों के इशारे पर भटकते रहते हैं सो, हमें परीक्षा करके हितकर बात सोच लेनी होगी और अगर हमारे iwoZlafpr भंडार में वह हितकर वस्तु निकल आवे, तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है?

ck/k i'u

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए।

   क) नाखून किस का प्रतीक है?

   ....

   ख) नाखून से प्रतीकात्मक रूप में किसका विकास जुड़ा हुआ है?

   ....

   ग) नाखून को संवारने का वर्णन किस भारतीय ग्रंथ में हुआ है?

   ....

   घ) नाखून काटने की प्रवृत्ति किस का प्रतीक है?

   ....

2. *''सब पुराने अच्छे नहीं होते, सब नये खराब ही नहीं होते। भले लोग दोनों की जांच कर लेते हैं, जो हितकर होता है, उसे ग्रहण करते है, और मूढ़ लोग दूसरों के इशारे पर भटकते हैं''* यह कथन किसका है?

   क) हजारी प्रसाद द्विवेदी
   ख) कालिदास
   ग) वात्स्यायन
   घ) दधीचि मुनि ( )

3. मानव शरीर की अभ्यासजन्य सहज वृत्तियों के ऐसे तीन उदाहरण दीजिए, जिनका उल्लेख निबंध में हुआ हो।

   1) ....
   2) ....
   3) ....

Tkfr;k इस देश में अनेक आयी हैं। लड़ती-झगड़ती भी रही है, फिर प्रेमपूर्वक बस भी गयी हैं। सभ्यता की ukuk सीढ़ियों पर खड़ी और नाना ओर मुख करके चलने वाली इन जातियों के लिए एक सामान्य धर्म खोज निकालना कोई सहज बात नहीं थी। भारतवर्ष के ऋषियों ने अनेक प्रकार से इस समस्या को सुलझाने की कोशिश की थी। पर एक बात उन्होंने लक्ष्य की थी। समस्त वर्णों और समस्त जातियों का एक सामान्य आदर्श भी है। वह है अपने ही बंधनों से अपने को बांधना। मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है। आहार-निद्रा आदि पशु-सुलभ स्वभाव उसके ठीक वैसे ही हैं, जैसे अन्य प्राणियों के। लेकिन वह फिर भी पशु से भिन्न है। उसमें संयम है, दूसरे के सुख-दुःख के प्रति संवेदना है, श्रद्धा है, तप है, त्याग है। यह मनुष्य के स्वयं के mnHkkfor बंधन हैं। इसीलिए मनुष्य झगड़े-टंटे को अपना आदर्श नहीं मानता, गुस्से में आकर चढ़-दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है और वचन, मन और शरीर से किये गये vlR;kpj.k को गलत आचरण मानता है। यह किसी भी जाति या वर्ण या समुदाय का धर्म नहीं है। यह मनुष्यमात्र का धर्म है। egkHkkjr में इसलिए fuoj Hkko] सत्य और अक्रोध को सब वर्णों का सामान्य धर्म कहा है :

> एतद्धि त्रितयं श्रेष्ठ सर्वभूतेषू भारत।
>
> निर्वैरता महाराज सत्यंक्रोध एव च।।

अन्यत्र इसमें निरंतर दानशीलता को भी गिनाया गया है (अनुशासन 120.10)। गौतम ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि वह सबके दुःख-सुख को सहानुभूति के साथ देखता है। यह आत्मनिर्मित बंधन ही मनुष्य को बनाता है। अहिंसा, सत्य और अक्रोधमूलक धर्म का मूल mRl यही है। मुझे आश्चर्य होता है कि अनजान में भी हमारी भाषा में यह भाव कैसे रह गया है। लेकिन मुझे नाखून के बढ़ने पर आश्चर्य हुआ था। अज्ञान सर्वज्ञ आदमी को पछाड़ता है और आदमी है कि सदा उससे ykgk yu dk dej dl gA

मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा? बड़े-बड़े नेता कहते हैं, वस्तुओं की कमी है, और मशीन बैठाओ, और उत्पादन बढ़ाओ, और धन की वृद्धि करो और बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाओ। ,d

c<k था। उसने कहा था – बाहर नहीं, भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ। क्रोध और द्वेष को दूर करो, लोक के लिए कष्ट सहो, आराम की बात मत सोचो, प्रेम की बात सोचो; आत्म-तोषण की बात सोचो, काम करने की बात सोचो। उसने कहा – प्रेम ही बड़ी चीज़ है, क्योंकि वह हमारे भीतर है। उच्छश्रृंखलता पशु की प्रवृत्ति है, 'स्व' का बंधन मनुष्य का स्वभाव है। बूढ़े की बात अच्छी लगी या नहीं, पता नहीं। उसे गोली मार दी गई। आदमी के नाखून बढ़ने की प्रवृत्ति ही हावी हुई। मैं हैरान होकर सोचता हूँ - बूढ़े ने कितनी गहराई में पैठ कर मनुष्य की वास्तविक pfjrkFkZrk का पता लगाया था।

ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों को बढ़ना बंद हो जाएगा। प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूंछ झड़ गयी है। उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जायेगी। शायद उस दिन वह ekj.kkL=k का प्रयोग भी बंद कर देगा। तब तक इस बात से छोटे बच्चों को परिचित करा देना वांछनीय जान पड़ता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है। बृहत्तर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों का बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी और उनकी बाढ़ को रोकना मनुष्यत्व का तकाजा है। मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायास बिना सिखाये आ जाती है, वह पशुत्व का द्योतक है और अपने को संयत रखना, दूसरे के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है। बच्चे यह जानें तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएं मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं।

सफलता और चरितार्थता में अंतर है। मनुष्य मारणास्त्रों के संचयन से, बाह्य उपकरणों के बाहुल्य से उस वस्तु को पा भी सकता है, जिसे उसने बड़े आडंबर के साथ सफलता नाम दे रखा है। परंतु मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए fu%'k"k भाव से दे देने में है। नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम है, जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस 'स्व' निर्धारित आत्म-बंधन का फल है, जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है।

कम्बख्त नाखून बढ़ते हैं तो बढ़ें। मनुष्य उन्हें बढ़ने नहीं देगा।

ck/k i'u

4. नीचे वे विशेषताएं दी गयी हैं जो पशुओं में नहीं पाई जातीं। इनमें जो गलत हो उन पर (×) और जो सही हो उन पर (√) का निशान लगाइए।
   क) संयम ( ) घ) तप ( )
   ख) आहार ( ) ङ) निद्रा ( )
   ग) श्रद्धा ( )
5. *''बाहर नहीं भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ।''* यह बात किसने कही थी?
   क) गौतम ग) गांधीजी
   ख) वेद व्यास घ) नेहरूजी ( )
6. महाभारत में निम्नलिखित में से किसे मनुष्य का सामान्य धर्म कहा है?
   क) निर्वैर भाव ग) अक्रोध
   ख) सत्य घ) उपर्युक्त तीनों ( )
7. निम्नलिखित वाक्यों में उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरिए:
   (संस्कृति, पशुता, पशु, मनुष्यता, मनुष्य)
   1) उच्छश्रृंखलता .... की प्रवृत्ति हैं, ''स्व'' का बंधन .... का स्वभाव है।
   2) वृहत्तर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों को बढ़ने देना मनुष्य की .... की निशानी है और उनकी बाढ़ को रोकना .... का तकाज़ा है।
   3) अपने आप पर अपने आप के द्वारा लगाया हुआ बंधन हमारी .... की बड़ी भारी विशेषता है।
   4) मनुष्य की .... को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती।

35-3 fucU/k dk lkj

इस निबंध की शुरुआत एक प्रश्न से होती है। लेखक की छोटी लड़की अपने पिता से पूछती है कि नाखून क्यों बढ़ते हैं? नाखून काटिए, तीन दिन बाद फिर बढ़ जाएंगे। अपनी बच्ची के इस मासूम से प्रश्न से लेखक एक जटिल सवाल में उलझ जाता है।

इस प्रश्न पर विचार करते हुए लेखक के सामने मानव सभ्यता के विकास की कहानी उजागर होने लगती है। कुछ लाख वर्ष पहले मनुष्य जंगली था। अपनी जीवन रक्षा के लिए वह दांतों और नाखूनों का उपयोग करता था। बाद में उसने अपनी रक्षा के लिए पत्थर, पेड़ की डाल और हड्डियों का भी उपयोग किया, उन्हें हथियार की तरह इस्तेमाल किया। मनुष्य लगातार उन्नति करता रहा। उसने लोहे के अस्त्र-शस्त्र बनाये। ऐसे ही हथियारों से आर्यों ने असुरों और दूसरी जातियों को पराजित किया। फिर बंदूक, तोप और बम बने। आज मनुष्य एटम बम तक पहुंच चुका है। उसे अब नाखून की जरूरत नहीं है। फिर भी, नाखून बढ़ते जा रहे हैं।

इस जटिल सवाल से लेखक लगातार जूझता है कि आखिर नाखून क्यों बढ़ते हैं? नाखून तो उस बर्बर युग की देन है जब वह नाखून का हथियार की तरह इस्तेमाल करता था। नाखून काटकर वह बर्बरता से छुटकारा पाना चाहता है। लेकिन क्या वास्तव में वह बर्बरता से छुटकारा पा सका है? हिरोशिमा का हत्याकांड तो इसी बर्बरता का प्रमाण है।

प्राचीन पुस्तकों में नाखूनों को सजाने और संवारने संबंधी उल्लेख मिलते हैं। वात्स्यायन के 'काम सूत्र' से मालूम पड़ता है कि आज से दो हजार वर्ष पहले मनुष्य अपने नाखूनों को तरह-तरह से सजाता-संवारता था। इन उल्लेखों से लेखक को भारतवर्ष की एक विशेषता का ज्ञान हुआ। यहां के लोगों द्वारा अपनी ऐसी प्रवृत्तियों को जिन्हें हम असत् कह सकते हैं, मानवीय रूप में ढालने की कोशिश का पता चलता है। इससे प्रतीत होता है कि भारतवासी शुरू से ही अपनी असत् प्रवृत्तियों से छुटकारा पाने का प्रयत्न करते रहे हैं।

इसके पश्चात द्विवेदीजी प्राणी विज्ञान को अपने चिंतन का आधार बनाते हैं। प्राणी विज्ञान से मालूम पड़ता है कि मनुष्य के मन की वृत्तियों की तरह ही मनुष्य के शरीर में अभ्यास से पैदा होने वाली बहुत-सी स्वाभाविक वृत्तियां अभी बाकी हैं। इसलिए शरीर ने अपने भीतर एक विशेषता पैदा कर ली है। बिना किसी प्रयत्न के वे वृत्तियां सक्रिय रहती हैं। नाखून बढ़ना, केशों का बढ़ना आदि ऐसी ही सहजता वृत्तियां हैं जिसके बारे में वह नहीं सोचता अगर वह सोचता तो उसे मालूम होता कि नाखून बढ़ा लेने की वृत्ति उसके अंदर के पशुत्व की निशानी है, उसे काटने की प्रवृत्ति मनुष्यता की। इसलिए पशुत्व के चिह्न भले ही उसमें रह गये हों, वह पशुता छोड़ चुका है। पशुता के सहारे वह आगे नहीं बढ़ सकता। उसे विकास के लिए नया रास्ता खोजना होगा। कारण, हथियार बनाने की प्रवृत्ति भी मनुष्यता की विरोधी है।

यहां लेखक एक और प्रश्न उठाता है कि मनुष्य की प्रगति की दिशा कौन-सी है? वह किस ओर बढ़ रहा है? हथियारों को बढ़ाने की ओर या उन्हें समाप्त करने की ओर। यह स्पष्ट है कि हमारे भीतर की बची पशुता के कारण ही नाखून बढ़ते हैं और इसी कारण हथियार भी। लेखक भारतीय संस्कृति के विशेष गुण आत्म नियंत्रण के बल पर सहजता पशुता पर विजय पाने की प्रेरणा देता है। अंग्रेजी शब्द ''इंडिपेंडेंस'' के भारतीय अर्थ ''स्वाधीनता'' का उदाहरण देते हुए द्विवेदीजी कहते हैं कि अपने ''स्व'' पर अपने आप के द्वारा लगाया हुआ बंधन भारतीय संस्कृति की खास विशेषता है। कालिदास का हवाला देते हुए लेखक यह स्पष्ट करता है कि भारतीय संस्कृति के इस गुण की चर्चा वह पुरातन के प्रति मोह के कारण नहीं कर रहा। हर पुरानी बात अच्छी नहीं होती और न ही हर नई बात खराब। आवश्यकता है विवेक से निर्णय लेने की। अगर हमें अपने सांस्कृतिक कोष से कोई कल्याणकारी वस्तु मिल जाए तो उसे अपना लेने से बेहतर क्या हो सकता है?

भारत में लंबे समय से अनेक जातियां आती रही हैं। उनमें संघर्ष भी हुआ है। उन सबके लिए ''एक सामान्य धर्म खोज निकालना'' आसान काम नहीं है। लेकिन ऐसा एक सामान्य आदर्श है और वह है अपने द्वारा बनाये गये बंधनों में स्वयं को बांधना। आहार, निद्रा, भय आदि स्वभाव मनुष्य और पशु में एक से है, लेकिन संयम, श्रद्धा, तपस्या, त्याग और दूसरों के प्रति संवेदना ही मनुष्यता की पहचान है। इसीलिए मनुष्य लड़ाई-झगड़े और बुरे आचरण को अच्छा नहीं समझता। सबके प्रति सहानुभूति का भाव, अहिंसा, सत्य और क्रोध से रहित धर्म का मूल आत्मनिर्मित बंधन में है। महाभारत में यही कहा गया है और यही उपदेश गांधी जी ने दिया था। गांधी जी ने कहा था कि केवल बाहरी उन्नति पर्याप्त नहीं है। मनुष्य के भीतर की पशुता को नष्ट करना होगा। क्रोध और हिंसा से दूर रहने और दूसरों के लिए कष्ट सहने का उपदेश भी गांधीजी ने दिया था। उच्छश्रृंखलता को वे पशु स्वभाव मानते थे और ''स्व'' के बंधन को मनुष्य का स्वभाव। किंतु उनको गोली मार दी गई। वह देखकर आश्चर्य होता है कि मनुष्य की वास्तविक सफलता के आधार को गांधीजी ने कितनी गहराई से खोज लिया था।

एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि जब मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना रुक जाएं। प्राणी विज्ञान के अनुसार अनावश्यक अंग समाप्त हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में शायद मनुष्य की पशुता भी समाप्त हो जाए और वह हिंसक हथियारों का प्रयोग बंद कर दे। किंतु जब तक ऐसा नहीं होता तब तक हमें बच्चों को यह शिक्षा देनी होगी कि नाखून का बढ़ना मनुष्य की पशुता की निशानी है, उसे न बढ़ने देना उसका आदर्श है। मानव जीवन में हथियारों का बढ़ाना पशुता है और उन्हें रोकना मानवता का सूचक। मानव स्वभाव में पुरातन काल से चली आ रही पशुता की वृत्तियां जैसे घृणा, ईर्ष्या आदि के लिए कोई प्रयास नहीं करना पड़ता, उसे सीखना नहीं होता। किंतु इन से मुक्ति पाने की तैयारी मनुष्य को करनी ही पड़ती है। इस स्थिति के कारण आत्मसंयम और दूसरों की भावनाओं का आदर करने का आदर्श, उसके निजी धर्म हैं और ये मनुष्य के गौरव के प्रतीक हैं। मनुष्य हिंसात्मक हथियारों को एकत्र करके, बाहरी साधनों की अधिकता से क्षणिक सफलता तो पा सकता है किंतु वास्तविक लक्ष्य तो उसे तभी प्राप्त होगा जब वह प्रेम, मैत्री, त्याग को अपनाये और अपने आपको पूरी तरह से सबके कल्याण के लिए समर्पित कर दे। नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस विवेकहीन प्राकृतिक वृत्ति का परिणाम है जो उसके जीवन में भौतिक सफलता तो लाती है, लेकिन जिनसे मनुष्य के मनुष्यत्व का विकास नहीं होता। आत्मनियंत्रण के द्वारा मनुष्य अपनी प्राकृतिक वृत्तियों को वश में करता है और मानवता के उज्ज्वल आदर्शों की ओर बढ़ता है। मनुष्य की यह विकास यात्रा ही वास्तविक यात्रा है और जीवन की सार्थकता भी इसी में है।

द्विवेदीजी का विश्वास है कि मनुष्य के नाखून भले ही बढ़ते रहें लेकिन वह अपनी पशु वृत्तियों को नहीं बढ़ने देगा।

35-4 lnHk lfgr O;k[;k

हमें उम्मीद है कि आपने निबंध को ध्यानपूर्वक पढ़ा होगा। निबंध का सार पढ़ने के बाद आपको यह मालूम हो गया होगा कि इस निबंध में क्या कहा गया है। लेकिन हो सकता है आप निबंध का मंतव्य न समझ पाये हों अथवा निबंध के तत्त्वों की दृष्टि से इसकी विशेषताएं उजागर न हुई हों। इसलिए हम आपके सामने अगली इकाई में निबंध की अंतर्वस्तु और भाषा-शैली की विशेषताएं प्रस्तुत करेंगे। यहां हम आपके सामने कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या प्रस्तुत करेंगे जिससे कि आपके सामने निबंध का कथ्य पूरा खुल सके।

निबंध के किसी अंश की व्याख्या कैसे की जाती है इसके संबंध में आप इकाई 34 में पढ़ चुके हैं। हम यहां उसे दोहराएंगे नहीं। यहां हम निबंध का एक अंश लेते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं :

x|k'k % *मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। उसके भीतर बर्बर-युग का कोई अवशेष रह जाए, यह उसे असह्य है। लेकिन यह भी कैसे कहूँ, नाखून काटने से क्या होता है? मनुष्य की बर्बरता घटी कहाँ है, वह तो बढ़ती जा रही है। मनुष्य के इतिहास में हिरोशिमा का हत्याकांड बार-बार थोड़े ही हुआ है। यह तो उसका नवीनतम रूप है। मैं मनुष्य की ओर देखता हूँ तो कभी-कभी निराश हो जाता हूँ। ये उसकी भयंकर पाशवी वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती।*

हमने आपको पहले की इकाइयों में बताया था कि सबसे पहले संदर्भ लिखा जाता है। संदर्भ के अंतर्गत रचना का शीर्षक, रचनाकार का नाम तथा वह प्रसंग, जिसके संदर्भ में उक्त उद्धरण कहा गया है। इस दृष्टि से अगर विचार करें तो हमारे सामने स्पष्ट है कि यह उद्धरण किस रचना से लिया गया है तथा इसका लेखक कौन है। इसके बाद प्रसंग पर आते हैं। इस निबंध की शुरुआत इस प्रश्न से होती है कि नाखून क्यों बढ़ते है? इस प्रश्न पर विचार करते हुए लेखक के सामने मानव सभ्यता का अब तक का विकास उजागर हो जाता है और इस विकास के साथ वह यह भी देखता है कि मनुष्य ने हथियारों का भी लगातार विकास किया है। किसी समय वह अपनी जीवन रक्षा के लिए नाखून और दांतों का इस्तेमाल करता था और अब उसने एटम बम जैसे संहारक हथियार बना लिए हैं। तब प्रश्न उठता है कि मनुष्य सभ्य हुआ है या नहीं? पशुता तो अब भी बाकी है जो उसके अंदर उस समय से ही थी जब वह जंगल में रहता था।

अब आप स्वयं उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर संदर्भ लिख सकते हैं।

lnHk % प्रस्तुत गद्यांश आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते है?' से लिया गया है। द्विवेदीजी ने इस प्रश्न पर विचार किया है कि नाखून क्यों बढ़ते हैं। हथियारों के

विकास को देखकर उनको लगता है कि मनुष्य में अब भी वह पशुता बाकी है जो बर्बर युग की निशानी है।

आइए, अब हम उक्त अंश की व्याख्या पर विचार करें। सबसे पहले यह देखिए कि इस उद्धरण में मुख्य बातें क्या कही गयी हैं। लेखक ने सबसे पहले यह बात कही है कि नाखून को मनुष्य पसंद नहीं करता क्योंकि वह बर्बर युग का अवशेष है। इस बात का तात्पर्य यह है कि मनुष्य नाखून से छुटकारा पाकर बर्बरता से छुटकारा पाना चाहता है। इस विचार के भीतर से लेखक में दूसरा प्रश्न उभरता है कि यह भी कैसे कहा जाय कि मनुष्य बर्बरता से मुक्त होना चाहता हैं? अगर सचमुच ऐसा होता तो हिरोशिमा जैसे हत्याकांड क्यों होते? वस्तुतः यह एक अंतर्विरोध है। एक तरफ मनुष्य नाखून से मुक्ति चाहता है, दूसरी तरफ एटम बम जैसे हथियारों का निर्माण और इस्तेमाल करने में लगा है। यह इस बात का द्योतक है कि मनुष्य अभी भी अपने अंदर की पशुता से मुक्त नहीं हुआ है। नाखून का बढ़ना उसी पशुता का प्रतीक है जो अभी नष्ट नहीं हुई है। जिस प्रकार बार-बार काटने पर भी नाखून बढ़ जाते हैं, उसी तरह मनुष्य की पशुता भी बार-बार उभर आती है और हिरोशिमा जैसे कांड हो जाते हैं।

इस प्रकार अब आप स्वयं व्याख्या लिख सकते हैं :

0;k[;k% लेखक का विचार है कि मनुष्य अब नाखून नहीं चाहता, क्योंकि नाखून उस युग की निशानी है जब वह जंगली अवस्था में रहता था। पर अब मनुष्य अपनी बर्बरता से मुक्त होना चाहता है। वह यह नहीं चाहता कि उसके अंदर जंगलीपन का कोई अवशेष रह जाय। वह पशुता से मुक्त होना चाहता है। लेकिन लेखक सोचता है कि यह बात भी पूरे विश्वास के साथ कैसे कही जा सकती है? केवल नाखून काटना ही तो पर्याप्त नहीं है? हिरोशिमा में अभी हाल में एटम बम का प्रयोग किया गया और हजारों-हजार आदमियों को मार डाला गया। यह एक हत्याकांड था। क्या यह मनुष्य की बर्बरता, उसके जंगलीपन की निशानी नहीं है? फिर कैसे कहा जा सकता है कि मनुष्य के अंदर की बर्बरता कम हुई है। लेखक अपनी निराशा व्यक्त करते हुए कहता है कि मैं जब नाखून की ओर देखता हूँ तो निराश हो जाता हूँ। ये मनुष्य के अंदर की पशुता के जीते-जागते प्रतीक हैं। जिस तरह नाखून काटे जाने के बावजूद बार-बार बढ़ जाते हैं, उसी तरह मनुष्य की पशुता भी बार.बार उभर आती है। नाखून की तरह पशुता भी नष्ट नहीं हो रही है। लेखक की चिंता और निराशा का कारण यही है।

इसके बाद आपको उपर्युक्त गद्यांश की भाषा-शैली के बारे में कुछ विशेष कहना चाहिए। जैसे आप यह कह सकते हैं कि इस उद्धरण में लेखक संहारक हथियारों से चिंतित हैं जो मनुष्य की पशुता के प्रतीक हैं। आप हिरोशिमा का संक्षिप्त विवरण दे सकते हैं। आप बता सकते हैं कि हिरोशिमा पर अमेरिका द्वारा परमाणु बम डाले जाने के तीन दिन बाद जापान के एक अन्य शहर नागासाकी पर भी परमाणु बम डाला गया था। आप उक्त उद्धरण की भाषा और शैली पर टिप्पणी कर सकते हैं और इसके लिए आपको अगली इकाई के 'संरचना शिल्प' भाग से मदद मिल सकती है।

fo'ks"k %

1) इस उद्धरण में लेखक मनुष्य की पशुता पर चिंता व्यक्त कर रहा है जिसके कारण हिरोशिमा जैसे हत्याकांड होते हैं।
2) हिरोशिमा जापान का एक शहर था और अमेरिका ने 6 अगस्त, 1945 को एटम बम से इस शहर को नेस्तनाबूत कर दिया था।
3) अमेरिका ने 9 अगस्त, 1945 को नागासाकी पर भी एटम बम गिराया था।
4) उद्धरण की भाषा तत्सम प्रधान है। भाषा में खड़ी बोली का परिनिष्ठित रूप मिलता है तथा लेखक के विचार बहुत ही स्पष्ट रूप में व्यक्त हुए हैं।

उपर्युक्त गद्यांश के बाद आइए, निबंध के एक और अंश को लें।

बृहत्तर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों को बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बाढ़ को रोकना मनुष्यत्व का तकाजा है।

lanHkZ % (आप रचना और लेखक के नाम देने के बाद प्रसंग का उल्लेख कीजिए। लेखक ने यहां हथियारों की वृद्धि पर चिंता प्रकट की है और इसे मनुष्यता के विरुद्ध माना है।)

0;k[;k % (व्याख्या में आप मनुष्यता और पशुता का अंतर बताइए। यह भी बताइए कि द्विवेदी जी किन गुणों को मनुष्य की पहचान मानते हैं और हथियारों के निर्माण को क्यों मानव-विरोधी मानते हैं। इस बात को आप नाखून के बढ़ने और काटने से भी जोड़िए और मनुष्य की सहज

वृत्तियों और उसके स्वधर्म के बंधन से भी जोड़िए। अगर आप इन सभी बातों को सही ढंग से रख सकेंगे तो आप उक्त अंश की बेहतर व्याख्या कर सकेंगे।)

fo'ys"k% (इसके अंतर्गत आप विनाशकारी हथियारों के लगातार बढ़ते खतरे के प्रति लेखक की चिंता को रेखांकित कर सकते हैं। इस महत्त्वपूर्ण बात को कहने के लिए लेखक के ढंग पर भी टिप्पणी कर सकते हैं।)

अब आप स्वयं इस उद्धरण की संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए।

vH;kl

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए।

1) उपर्युक्त गद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

lanHkZ % ....

....

O;k[;k % ....

....

....

fo'ys"k % ....

....

2) *कालिदास ने कहा था कि सब पुराने अच्छे नहीं होते, सब नये खराब ही नहीं होते। भले लोग दोनों की जांच कर लेते हैं, जो हितकर होता है, उसे ग्रहण करते हैं, और मूढ़ लोग दूसरों के इशारे पर भटकते रहते हैं सो, हमें परीक्षा करके हितकर बात सोच लेनी होगी और अगर हमारे पूर्वसंचित भंडार में वह हितकर वस्तु निकल आवे, तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है।*

lanHkZ %

संकेतः लेखक का नाम

रचना का नाम

रचना में संदर्भ : नये और पुराने विचारों में मानने योग्य कौन और उसका आधार।

....

....

....

O;k[;k %

संकेत : कालिदास के कथन की व्याख्या : ग्रहणीय कौन?

नया या पुराना

नये या पुराने का अंतर

बुद्धिमान और मूर्ख का अंतर

पुराना भी स्वीकार्य : अगर वह हितकर हो

....

....

fo'ys"k %

संकेतः 1) कालिदासः 'मालविकाग्निमित्र' से उद्धरण

2) पुरातनपंथी दृष्टि से भिन्न

3) भाषा-शैली की विशेषता

....

....

....

35-5 lkjka'k

- इस इकाई में आपने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' का वाचन किया है। इस निबंध में द्विवेदीजी ने नाखून के बहाने मनुष्य की हिंसक वृत्ति पर विचार किया है। उन्होंने गंभीरता से इस प्रश्न को उठाया है कि क्या कारण है कि इतनी भौतिक उन्नति के बावजूद मनुष्य अपनी बर्बर मनोवृत्तियों से मुक्त नहीं हो पाया है। इसका उत्तर देते हुए कहा है कि जब मनुष्य आत्म नियंत्रण वाले गुणों को भूलता है तभी

वह पशुता की ओर बढ़ता है। हथियारों का बढ़ता जख़ीरा इस बात का प्रमाण है। भारतीय संस्कृति की विशेषता है स्वाधीनता या स्व का बंधन। हमें इसे याद रखने की आवश्यकता है। निबंध में कही गयी इन बातों को आप अपने शब्दों में प्रस्तुत कर सकते हैं।

- 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' अत्यंत महत्त्वपूर्ण निबंध है। इस निबंध में लेखक ने कई महत्त्वपूर्ण सवालों को उठाया है। आपने इस निबंध के कुछ अंशों की व्याख्या द्वारा इसमें कही गयी बातों को समझने का प्रयास किया है। अब आप स्वयं निबंध के ऐसे ही महत्त्वपूर्ण अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकते हैं।

35.6 शब्दावली

मानवतावादी दृष्टि : वे गुण जिनसे मनुष्य के मनुष्यता की पहचान होती है जैसे सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहानुभूमि, निर्वैर आदि। उन्हें मानवता या मनुष्यता कहते हैं। मनुष्य के सकारात्मक गुणों को अपनी दृष्टि का आधार बनाना मानवतावाद है।

अल्पज्ञ : कम जानने वाला।

सेंध : वह छेद जो चोर दीवार तोड़कर बनाते हैं।

बनमानुष : बिना पुंछ का बंदर जिसकी शक्ल आदमी से कुछ अधिक मिलती है।

दधीचि : एक पौराणिक चरित्र, महर्षि शुक्राचार्य के पुत्र, वृत्रासुर के अत्याचार से जब देवता पीड़ित थे तो इंद्र ने दधीचि की हड्डियों से वज्र बनाया और उससे वृत्रासुर का वध किया।

असुर : राक्षस, एक पौराणिक जाति जिसकी वास्तविकता के बारे में कुछ कहना असंभव है। हो सकता है आर्यों का जिनसे संघर्ष हुआ हो, उन्हें असुर पुकारते हों।

आर्य : श्रेष्ठ, यहां एक जाति से तात्पर्य है जिसके बारे में इतिहासकारों का विचार है कि ईसा से लगभग दो हजार वर्ष पहले वे भारत आये थे और उन्होंने अपनी सभ्यता यहाँ स्थापित की।

नाग, सुपर्ण, यक्ष, गंधर्व : प्राचीन भारतीय जातियाँ जिनका उल्लेख हिंदू पुराणों में मिलता है।

पलीता वाली बंदूक : बंदूक का आरंभिक रूप, जब बंदूक में बारुद भरकर उसमें आग लगाई जाती थी और फिर छोड़ा जाता था।

नख-दंतावलंबी : नाखून और दांतों पर निर्भर।

ततः किम : तो इससे क्या?

अवशेष : शेष, बाकी।

बर्बरता : असभ्यता या जंगलीपन।

हिरोशिमा : जापान का एक शहर जिस पर अमेरिका ने दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान 6 अगस्त 1945 को एटम बम गिराया था और जिससे हजारों-हजार लोग मारे गये थे।

पाशवी वृत्ति : पशुओं जैसा स्वभाव।

वात्स्यायन : कामसूत्र पुस्तक के लेखक, वास्तविक नाम मल्ल नाग, इस पुस्तक में मनुष्य की काम वृत्तियों और उससे जुड़ी बातों का वर्णन है।

वर्तुलाकार : गोल आकार का।

चंद्राकार : चंद्रमा जैसा आकार।

दंतुल : बड़े दांत जैसा।

गौड़ देश : बंगाल का पुराना नाम।

दाक्षिणात्य : दक्षिण देश का निवासी।

अधोगामिनी : अवनति, हीनता या बुराई।

सहज वृत्तियां : मनोविज्ञान से संबंधित शब्द जिसका अर्थ है, स्वाभाविक क्रियाएं या स्वभाव।

निरीह : भोली-भाली।

अनुवर्तिता : अनुकरण।

विपुल : विस्तृत या अधिक।

vuqla/kku % अनुसंधान या खोज।
dkfynkl % संस्कृत के महान रचनाकार जिन्होंने नाटक और काव्य ग्रंथों की रचना की।
iwoZlafpr % पहले से इकट्ठा किया हुआ।
tkfr;k % यहां जातियां शब्द भारत के बाहर से आने वाले विभिन्न समुदायों के लिए इस्तेमाल किया गया है जो अलग-अलग क्षेत्रों और संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते थे। जैसे, आर्य, शक, हुण, यवन, तुर्क, मंगोल आदि।
ukuk % अनेक प्रकार के।
mn~Hkkfor % उत्पन्न या कल्पित।
vlR;kpj.k % सत्य के विपरीत आचरण या झूठा व्यवहार।
egkHkkjr % वेदव्यास द्वारा रचित संस्कृत का प्राचीन महाकाव्य।
fuoSj Hkko % वैर से रहित भाव।
mRl % स्रोत।
yksgk ysuk (मु.) : मुकाबला करना।
,d cw<+k : यहां बूढे से तात्पर्य गांधी जी से है।
pfjrkFkZrk % जिसका प्रयोजन सिद्ध हो गया हो।
dej dluk (मु.) : तैयार रहना।
ekj.kkL= % ऐसे हथियार जिससे दूसरे की जान जाती हो।
fu%'ks"k % जिसमें कुछ बच न जाए, समूचा।

35-7 cks/k iz'uksa@vH;klksa ds mÙkj

cks/k iz'u

1. क) पशुता ख) अस्त्र-शस्त्र ग) कामसूत्र घ) मनुष्यता
2. (ख)
3. 1) केश बढ़ना 2) नाखून बढ़ना 3) पलकों का उठना-गिरना
4. क) √ ख) × ग) √ घ) √ ङ) ×
5. (ग)
6. (घ)
7. 1) पशु, मनुष्य 2) पशुता, मनुष्यत्व 3) संस्कृति 4) पशुता

vH;kl

1. भाग 35.4 में इस अंश की व्याख्या पर विचार किया गया है और उसके आधार पर अपना उत्तर लिखिए।
2. lanHkZ % प्रस्तुत पंक्तियां आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' में से ली गयी हैं। इनमें लेखक ने संस्कृत के महाकवि कालिदास के एक श्लोक का भावार्थ देते हुए नये और पुराने के संबंधों पर विचार किया है। उन्होंने कहा है कि मृत अतीत से चिपके रहना बंदरिया का आदर्श हो सकता है, मनुष्य का नहीं।

O;k[;k % कालिदास का विचार था कि कोई चीज पुरानी हो जाने से ही अच्छी नहीं हो जाती और न ही कोई चीज नयी हो जाने के कारण खराब हो जाती है। नया भी अच्छा हो सकता है और पुराना भी। समझदार लोग इसके बारे में निर्णय उसके नये या पुराने से नहीं करते बल्कि वे वह जाँच करते हैं कि वह ग्रहण करने योग्य है या नहीं। उसको ग्रहण करना हितकार होगा या नहीं। मूर्ख वे ही लोग कहलाते है जो अपने विवेक का इस्तेमाल नहीं करते और दूसरों के कहे का अंधानुकरण करते हैं और बाद में पछताते हैं। द्विवेदीजी कालिदास के मत से सहमति प्रकट करते हुए यह और जोड़ते हैं कि अगर हमें अतीत के संचित कोष से कोई हितकारी वस्तु मिलती है तो निस्संकोच उसे अपना लेना चाहिए।

fo'ks"k% 1) कालिदास का यह मत उनके ग्रंथ 'मालविकाग्निमित्रम्' से लिया गया है।
2) इन पंक्तियों में द्विवेदीजी ने नये और पुराने के संबंध में एक विवेकसम्मत दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।
3) उक्त गद्यांश की भाषा सरल और तत्सम हिंदी में है।